पाँच

कलीसिया का विकास

Church Growth

अतः आप एक पास्टर हैं और आप चाहते हैं कि आपकी कलीसिया बढ़े। पास्टरों में पाई जाने वाली यह एक सामान्य अभिलाषा है। लेकिन आप अपनी कलीसिया को क्यों बढ़ाना चाहते हैं? *आपके मन में इसका सही-सही कारण क्या है।*

क्या आप अपनी कलीसिया को इसलिए बढ़ाना चाहते हैं ताकि आप स्वयं को सफल अनुभव कर सकें? क्या आप सम्मानित होना और प्रभावशाली अनुभव करना चाहते हैं? क्या आप लोगों पर अपनी शक्ति को दिखाना चाहते हैं? क्या आप धन प्राप्त करने की आशा करते हैं? ये सभी अपनी कलीसिया को बढ़ता हुआ देखने की इच्छा करने के गलत कारण हैं।

यदि आप चाहते हैं कि आपकी कलीसिया इसलिये बढ़े ताकि पवित्र आत्मा द्वारा अधिक से अधिक जीवनों के परिवर्तित होने पर परमेश्वर को महिमा मिले, तब कलीसिया बढ़ाने की इच्छा करना उचित है।

निश्चय ही इस तरह के विचार करते हुए स्वयं को मूर्ख बनाना सरल है कि हमारे उद्देश्य शुद्ध हैं जबकि वे वास्तव में स्वार्थ के हों।

हम अपने सच्चे उद्देश्यों के बारे में कैसे जान सकते हैं? हम यह कैसे जान सकते हैं कि हम सच में परमेश्वर के राज्य का निर्माण करना चाहते है या फिर *अपने* राज्य का निर्माण करना चाहते हैं?

एक तरीका दूसरे पास्टरों की सफलता पर अपनी भीतरी प्रतिक्रिया की जांच करने का है। यदि हम सोचते हैं कि हमारे उद्देश्य शुद्ध हैं, यदि हम सोचते हैं कि हम सच में परमेश्वर के राज्य और *उसकी* कलीसिया को बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन दूसरी कलीसियाओं की बढ़ोत्तरी के बारे में सुनने पर जब हम अपने हृदयों में जलन व ईर्ष्या को पाते हैं, तो यह प्रगट करता

है कि हमारे उद्देश्य कितने शुद्ध हैं। यह दिखाता है कि वास्तव में हमारी कलीसियाई विकास में कोई रुचि नहीं है, बल्कि *अपनी* स्वयं की कलीसिया के विकास में। और ऐसा क्यों है? क्योंकि हमारे उद्देश्य स्वार्थपूर्ण होते हैं।

अपने क्षेत्र में एक नई कलीसिया के आरम्भ होने के बारे में सुनकर भी हम अपने हृदय की प्रतिक्रिया को जांच सकते हैं। यदि हम डरा हुआ अनुभव करते हैं, तो यह इस बात का चिन्ह है कि हमें परमेश्वर के राज्य की तुलना में अपने राज्य की अधिक चिन्ता है।

विशाल और विकासशील कलीसियाओं के पास्टर भी इसी तरह से अपने उद्देश्यों की जांच कर सकते हैं। इस तरह के पास्टर स्वयं से इस तरह के प्रश्न करते होंगे, ''क्या मैंने कभी अपनी मण्डली के प्रमुख अगुवों और लोगों को भेजने या छोड़ देने के द्वारा नई कलीसियाओं का निर्माण करने पर विचार किया है, जिसके परिणामस्वरूप मेरी कलीसिया छोटी होती जा रही है?'' इस तरह का विचार रखने वाला पास्टर अपनी स्वयं की महिमा के लिए अपनी कलीसिया का निर्माण करता है। (दूसरी ओर, एक विशाल कलीसिया का पास्टर अपनी महिमा के लिए नई कलीसियाओं का निर्माण कर सकता है, जिससे वह इस बात पर गर्व कर सके कि उसकी कलीसिया से कितनी कलीसियाओं का जन्म हुआ है)। दूसरा प्रश्न जो वह स्वयं से करेगा, ''क्या मैं छोटी कलीसियाओं के पास्टरों के साथ रहता हूं या फिर मैं उनसे दूरी बनाए रखता हूं, स्वयं को उनसे उच्च समझते हुए?'' क्या मैं अपनी गृह कलीसिया में बारह से लेकर बीस लोगों तक का पास्टर बनना चाहूंगा या फिर ऐसा करना मेरे अहम् के लिए बहुत कठिन होगा?[23]

कलीसिया विकास आन्दोलन
The Church Growth Movement

अमरीका और कनाडा के पुस्तक संग्रहालय अक्सर कलीसियाई विकास की पुस्तकों से भरे होते हैं। इन पुस्तकों और इनमें पाई जाने वाली धारणाओं को सारे संसार में फैलना है। पास्टर इस बात के लिए भूखे रहते हैं कि उनकी कलीसियाओं में लोगों की उपस्थिति किस तरह से बढ़े और वे प्राय: अमरीका के विशाल कलीसियाई पास्टरों की सलाह को एकदम से ग्रहण कर लेते हैं जो अपनी इमारतों के आकार तथा रविवार की आराधना में आनेवाले लोगों की संख्या के कारण सफल प्रतीत होते हैं।

तथापि, परखने वाले इस बात को जान जाते हैं कि इमारत का आकार और लोगों की उपस्थिति शिष्य निर्माण की गुणवत्ता की ओर संकेत नहीं देते हैं। कुछ अमरीकी कलीसियाओं का विकास बाइबल के सत्यों को विकृत करने वाले सिद्धान्तों को

23. गृह कलीसिया नमूने का एक और लाभ है-पास्टर गलत कारणों से मण्डली को विशाल करने में संघर्षरत नहीं हैं, क्योंकि मण्डली का आकार घर के आकार से सीमित हो जाता है।

कार्यान्वित करने पर हुआ है। मैं संसार भर के उन सभी पास्टरों से बोला हूं जो अमरीका के असंख्य पास्टरों के इस विश्वास और घोषणा के कारण सदमे की दशा में हैं कि एक व्यक्ति एक बार उद्धार पाने पर उसे कभी नहीं खोता है, चाहे उसका विश्वास कैसा भी हो या उसका जीवन जीने का ढंग भी चाहे जैसा हो। इसी तरह से बहुत से अमरीकी पास्टर एक सस्ते अनुग्रह के सुसमाचार को कम करते हुए यह घोषित करते हैं कि वे पवित्रता के बिना स्वर्ग जा सकते हैं। सम्पन्नता के सुसमाचार की इस तरह की घोषणाएं उन लालची लोगों के लिए ईंधन का कार्य करती हैं जिनका धर्म इस पृथ्वी पर खज़ाना जमा करने का है। इस तरह के पास्टरों की कलीसियाई विकास की तकनीकों पर कभी भी अमल नहीं करना चाहिए।

मैंने कलीसियाई विकास पर लिखी कई पुस्तकों को पढ़ा है, और उनके बारे में मेरी भावनाएं मिश्रित हैं। उनमें पाई जाने वाली कई नीतियां और शिक्षा कुछ मात्रा में बाइबल पर आधारित होने पर उन्हें विस्तृत रूप से पढ़े जाने के योग्य बनाती हैं। उनमें से लगभग सभी 1700 वर्ष पुराने संस्थागत नमूने पर आधारित हैं, बाइबल आधारित कलीसियाई नमूने की तुलना में। परिणामस्वरूप मुख्य केन्द्र शिष्यों और शिष्य-निर्माताओं को बढ़ाने के द्वारा मसीह की देह का निर्माण करने पर नहीं है बल्कि व्यक्तिगत संस्थागत मण्डलियों का निर्माण करने पर, जिनके लिए हमेशा बड़ी इमारतों, विशिष्ट कलीसियाई कर्मचारियों और कार्यक्रमों और एक ऐसे ढांचे की ज़रूरत होती है जो एक परिवार की तुलना में एक व्यवसाय समूह अधिक हो।

कुछ आधुनिक कलीसियाई विकास नीतियां यह परामर्श देती प्रतीत होती हैं कि केवल संख्या बढ़ाने के लिए कलीसियाई सेवा को उन लोगों के लिए अधिक आकर्षक बनाया जाए जो मसीह के पीछे चलना नहीं चाहते हैं। वे छोटी सलाह देते, सकारात्मक संदेश देते, अव्यक्त आराधना करते और बहुत सी सामाजिक गतिविधियां करते हैं, जिनके बारे में कभी भी धन का वर्णन नहीं किया जाता। इसका परिणाम उन शिष्यों का निर्माण करने में नहीं होता जो स्वयं का इंकार करते हुए मसीह की सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं। इसका परिणाम उन मसीहियों के रूप में निकलता है जो इस संसार से अविभेद्य हैं और नरक के बड़े मार्ग पर हैं। यह संसार को जीतने की परमेश्वर की रणनीति है। यह ''कलीसियाई-विकास'' नहीं बल्कि ''विश्व विकास'' है।

अन्वेषक - भावुक नमूना
The Seeker-Sensitive Model

प्रसिद्ध अमरीकी कलीसियाई विकास की रणनीति का उल्लेख अक्सर ''अन्वेषक-भावुक'' नमूने के रूप में किया जाता है। इस रणनीति में, रविवार प्रात: की सेवा को इस तरह से तैयार किया जाता है कि (1) मसीही उद्धार न पाए मित्रों

को आमंत्रित कर सुविधा अनुभव करते हैं और (2) उद्धार न पाए लोग सुसमाचार को अपराधी न ठहराने वाले शब्दों में सुनते हैं जिसे वे संबन्धित करने के साथ-साथ समझ भी सकते हैं। सप्ताह के बीच की सेवा और छोटे समूहों को विश्वासियों को शिष्य बनाने के लिए आरक्षित किया गया है।

इस तरह से, कुछ व्यक्तिगत कलीसियाओं का विकास विस्तृत रूप में हुआ है। अमरीकी संस्थागत कलीसियाओं में, इनमें प्रचार करने और लोगों को शिष्य बनाने की बड़ी शक्ति हो सकती है, जब तक कि छोटे समूह सामूहिक रूप से रहें (जो वे सामान्यता नहीं रहते) और वहां शिष्य बनाएं, और जब तक सुसमाचार से समझौता नहीं किया जाता (जो हमेशा होता है जबकि लक्ष्य अपराधी ठहराना न हो, क्योंकि सत्य सुसमाचार मानव को अपराधी ठहराता है)। अन्वेषक-भावुक कलीसियाएं उद्धार न पाए लोगों तक पहुंचने के लिए कुछ रणनीतियों का प्रयोग करती हैं। एक ऐसी चीज़ जो अधिकांश संस्थागत कलीसियाओं के पास नहीं है।

लेकिन अमरीकी अन्वेषक-भावुक नमूने की तुलना कलीसियाई विकास के बाइबल आधारित नमूने से कैसे की जाती है?

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, परमेश्वर के बुलाए हुए प्रेरितों और प्रचारकों ने सार्वजनिक रूप से और घर-घर जाकर सुसमाचार का प्रचार किया, उसके साथ चिन्ह और चमत्कार भी जुड़े थे जिसने अविश्वासियों को आकर्षित किया। पश्चात्ताप करने वालों और प्रभु यीशु में विश्वास करने वालों ने स्वयं को प्रेरितों की शिक्षा के प्रति समर्पित किया, और वे नियमित रूप से घरों में मिलते थे जहां वे परमेश्वर का वचन सीखते, आत्मिक वरदानों पर अभ्यास करते, प्रभु भोज मनाते, मिलकर प्रार्थना करते थे, यह सभी प्राचीनों/पास्टरों और निरीक्षकों की अगुवाई के अधीन होता था। हर कोई सुसमाचार के बारे में मित्रों और पड़ोसियों को बताता था। कलीसियाई विकास की गति को धीमा करने और परमेश्वर के राज्य के उन स्रोतों को छीनने के लिए वहां कोई कलीसियाई इमारत नहीं थी जो सुसमाचार को फैलाने और शिष्य बनाने में सहायक थे। अगुवों को सेमिनरी या बाइबल स्कूल भेजे जाने के बजाय उनके कामों पर ही प्रशिक्षित किया जाता था। एक सीमित समय के लिए इस सब का परिणाम एक घातक कलीसिया विकास के रूप में हुआ, जब तक कि सभी ग्रहण किये गए लोग एक दिए गए क्षेत्र में नहीं पहुंच गए।

तुलना करने पर, अन्वेषक-भावुक नमूना प्राय: चिन्ह और चमत्कारों से रिक्त रहता है, इसलिए इसमें ईश्वरीय विज्ञापन व आकर्षण की कमी होती है। यह लोगों को उस इमारत की ओर आकर्षित करने पर निर्भर करता है जहां वे संदेश को सुन सकते हैं। प्रचारक की वक्ता प्रतिभा और प्रतिपादित करने की उसकी शक्ति अभिशंसा के प्रमुख स्रोत हैं। यह पौलुस की विधियों से कितनज्ञ भिन्न है जिसने लिखा, ''और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ

का प्रमाण था। इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो'' (1 कुरि. 2:4-5)।

अधिक भिन्नताएं
More Differences

अन्वेषक-भावुक नमूना सामान्यता प्रेरितों और प्रचारकों से रिक्त होता है, क्योंकि इसमें प्रमुख स्थान पास्टर का है। एक प्रश्न: क्या प्रेरितों और प्रचारकों को उनके प्रचार-कार्य की भूमिका से हटा कर कलीसियाई विकास हेतु वह उत्तरदायित्व पास्टर को एक सर्वोच्च स्रोत के रूप में दिया जाए?[24]

अन्वेषक-भावुक पास्टर रविवार की सेवा के समय सप्ताह में एक बार प्रचार करता है जहां मसीहियों को उद्धार न पाए लोगों को लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अत:, सामान्य रूप से कहा जाए तो, सुसमाचार को सप्ताह में केवल एक बार उद्धार न पाए लोगों और कलीसियाई सदस्यों के साथ सुना जा सकता है। ये उद्धार न पाए लोग कलीसिया में आने के लिए तैयार होते होंगे, और उन्हें उनके द्वारा आमंत्रित किया जाता होगा जो उन्हें कलीसिया में आमंत्रित करना चाहते हैं। बाइबल पर आधारित नमूने में, प्रेरित और प्रचारक लगातार सार्वजनिक रूप में और निजी स्थानों में सुसमाचार की घोषणा करते हैं, और सभी विश्वासी अपने मित्रों और पड़ोसियों को सुसमाचार को बांटते हैं। इन दोनों नमूनों में से उद्धार न पाए लोग किससे अधिक सुसमाचार को सुनेंगे?

अन्वेषक-भावुक नमूने के लिए एक इमारत की आवश्यकता होती है जिससे विश्वासी अपने उद्धार न पाए मित्रों को आमंत्रित करने में शर्मिन्दा न हों और इसी तरह से उद्धार न पाए लोगों को वहां आने में शर्मिन्दगी न हो। इसके लिए हमेशा पर्याप्त मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। सुसमाचार को ''फैलाए'' जाने से पहले, एक स्वीकार्य इमारत को तैयार किया जाता है। अमरीका में इस तरह की इमारत का सही स्थान पर होना ज़रूरी है, सामान्यता धनी उपनगरों में। इसके विपरीत, बाइबल पर आधारित नमूने के लिए किसी इमारत, विशेष स्थान या धन की आवश्यकता नहीं

24. आज हमारे पास इतने अधिक प्रचारकों, शिक्षकों, भविष्यद्धक्ताओं और प्रेरित पास्तरीय वाली कलीसियाओं के होने का यही कारण है। बहुत से परमेश्वर-प्रदत्त सेवकों को संस्थागत कलीसियाई संरचना में एक उचित स्थान या कोई भी स्थान नहीं दिया जाता है, और इसी कारण गैर पास्तरीय सेवकों का अन्त पास्तरीय कलीसियाओं से हो जाता है, कलीसियाओं से उन महान आशीष को लूटते हुए जिसमें अर्थात् एक बाइबल संरचना में रहते हुए वे स्वयं अर्थात् विश्वासियों की एक विशाल देह हो सकते थे। ऐसा लगता है कि हर कोई अपनी सच्ची बुलाहट के विपरीत, एक संस्थगत कलीसिया के रूप में अपने स्वयं के राज्य का निर्माण करने में लगा हुआ है। क्योंकि पास्टर का ''*अपने* लोगों'' के दशंवाश पर उचित अधिकार होता है, और उसमें से अधिकांश धन इमरतों को बनाने व मरम्मत करने में चला जाता है, गैर पास्तरीय सेवक कलीसियाओं में चारवाही करने की नीति को अपनाते हैं जिससे सेवकाई को वित्तीय सहायता मिल सके जिसके लिए वास्तव में वे बुलाए गए हैं।

होती। सुसमाचार का फैलाव उन लोगों पर सीमित नहीं है जो रविवार के दिन एक विशेष इमारत में आ सकते हैं।

अभी भी अधिक भिन्नताएं
Still More Differences

कुछ अन्वेषक-भावुक कलीसियाओं की बाइबल आधारित कलीसियाओं से तुलना करने पर अभी भी अधिक भिन्नताएं पाई जाती हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों और प्रचारकों ने लोगों को पश्चात्ताप करने, प्रभु यीशु में विश्वास करने और तत्काल ही बपतिस्मा लेने को बुलाया। लोगों से उनके परिवर्तन होने पर मसीह का शिष्य होने की अपेक्षा की जाती थी, लूका 14:26-33 और यूहन्ना 8:31-32 में बताई गई यीशु द्वारा शिष्यता के लिए ठहराई गई मांग को पूरा करते हुए। उन्होंने आरम्भ यीशु से सर्वोच्च रूप से प्रेम करने, उसके वचन में बने रहने, अपनी क्रूसों को उठाने, अपने स्वामित्व के सभी अधिकारों को छोड़ने व नये भण्डारीपन को धारण करते हुए किया जिसका संबंध अब परमेश्वर से था।

अन्वेषक-भावुक कलीसियाओं में बताया जाने वाला सुसमाचार प्राय: भिन्न होता है। पापियों को बताया जाता है कि परमेश्वर उनसे कितना अधिक प्रेम करता है, वह उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली आवश्यकताओं को कैसे पूरा कर सकता है, और ''यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने'' पर वे कैसे उद्धार पा सकते हैं। एक छोटी ''उद्धार की प्रार्थना'' को करने के पश्चात्, कभी भी शिष्यता की कीमत के बारे में बताया नहीं जाता है, उन्हें प्राय: आश्वस्त किया जाता है कि उन्होंने सही उद्धार पाया है और उनसे एक ऐसे वर्ग से जुड़ने को कहा जाता है जहां वे मसीह में बढ़ना आरम्भ कर सकते हैं। ऐसे वर्ग से जुड़ जाने पर (अधिकांश कभी भी कलीसिया की ओर नहीं जाते), उन्हें अपने साथ एक क्रमबद्ध शिक्षण प्रक्रिया को लेकर जाना होता है जो मसीह की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होने के बजाय कलीसिया के विशिष्ट सिद्धान्तों से अधिक ज्ञान प्राप्त करने पर केन्द्रित होती है। इस 'शिष्यता' कार्यक्रम के शिखर पर विश्वासी *धीरे-धीरे* अपनी आय का दशवांश कलीसिया को देना आरम्भ करता है (जिससे गैर-बाइबल संबंधी कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है, जो एक भयंकर भण्डारीपन की गणना में आता है, उस सबके लिए समर्थन देते हुए जिसके लिये परमेश्वर ने अभिषिक्त नहीं किया है और उसे छीनते हुए जिसके लिए परमेश्वर ने समर्थन नहीं चाहा है) और उसका इस विश्वास की ओर नेतृत्व किया जाता है कि उसे ''उसकी सेवकाई मिल गई'' है जबकि वह संस्थागत कलीसिया में इस समर्थक भूमिका को करना आरम्भ कर देता है जिसके बारे में कभी भी पवित्रशास्त्र में नहीं बताया गया है।

उस समय क्या होगा यदि आपके देश की सरकार सेना में पर्याप्त पुरुषों के न

होने पर 'अन्वेषक-भावुक' के समान होने के बारे में सोचने लगे? कल्पना करें कि वे भर्ती किये गए लोगों से प्रतिज्ञा करें कि यदि वे शामिल होंगे तो उनसे कुछ भी करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी-उनके वेतन चेक उनके लिए एक नि:शुल्क उपहार होंगे। वे सुबह जब चाहे उठ सकते हैं। वे प्रशिक्षण में चाहे तो भाग ले सकते हैं और यदि नहीं, तो उनके पास टेलीविज़न देखने का विकल्प है। युद्ध के आरम्भ होने पर वे यह निर्णय ले सकते हैं कि या तो वे युद्ध पर जाएं या फिर समुद्र तट पर। परिणाम क्या होगा?

इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसा करने से सेना की संख्या में वृद्धि हो जाएगी। लेकिन वह सेना एक सेना नहीं रहेगी, जब तक कि वह अपने कार्य को न करे। और ऐसा ही अन्वेषक-भावुक कलीसियाओं के साथ होता है। स्तर घटने से रविवार की उपस्थिति बढ़ जाती है लेकिन आज्ञाकारिता और शिष्यता नष्ट हो जाते हैं। वे अन्वेषक-भावुक कलीसियाएं जो रविवारों को ही ''सुसमाचार का प्रचार'' करतीं और सप्ताह के बीच ''शिष्यता'' की सेवा करती हैं उन्हें लगता है कि यदि वे सप्ताह के बीच की सेवा में लोगों को बताएंगे कि केवल यीशु के शिष्य ही स्वर्ग जाएंगे, तो इससे समस्या होगी। लोगों को लगता है कि रविवार की प्रात: उनसे झूठ बोला जाता है। अत: इस तरह की कलीसियाएं सप्ताह के बीच में लोगों को धोखा देने के साथ-साथ उन्हें स्वर्ग जाने के लिए शिष्यता और आज्ञाकारिता को विकल्प के रूप में देती हैं।[25]

मैं निश्चय ही समझता हूं कि कुछ संस्थागत कलीसियाएं कुछ ऐसे बाइबल पर आधारित पहलुओं को सम्मिलित करती हैं जिन्हें दूसरी कलीसियाएं नहीं करतीं। इसके अतिरिक्त, बाइबल संबंधी नमूना शिष्यों और शिष्य-निर्माताओं को बढ़ाने में अधिक प्रभावी है।

आज बाइबल पर आधारित नमूने का अनुसरण क्यों नहीं किया जाता है? बहानों की सूची की तो कोई सीमा नहीं है, परन्तु अन्तिम समीक्षा में, बाइबल पर आधारित नमूने का अनुसरण न करने का कारण परम्परा, अविश्वास और अनाज्ञाकारिता है। अधिकांश लोगों का कहना है कि आज हमारे संसार में बाइबल पर आधारित नमूना एक असंभावना है। लेकिन सच्चाई यह है कि आज संसार के कई स्थानों में बाइबल पर आधारित नमूने का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, पिछली आधी शताब्दी से भी अधिक समय से चीन में कलीसिया के विकास का कारण विश्वासियों का बाइबल पर आधारित नमूने का अनुसरण करना है। क्या परमेश्वर चीन के अलावा कहीं और भिन्न है?

---

25. यीशु द्वारा लूका 14:26-33 में उसके सच्चे शिष्य होने की मांगों की गणना का स्मरण करें जिन्हें उन लोगों से नहीं बोला गया था जो पहले से ही विश्वासी थे, मानो वह उनकी आत्मिक यात्रा में उन्हें एक दूसरा कदम दे रहा था। इसके विपरीत वह भीड़ से बोल रहा था। यीशु का शिष्य बनना उसके द्वारा दिया जाने वाला *केवल* पहला कदम था, जो उद्धार के कदम से कम नहीं है। यह उनके विरुद्ध खड़ा होता है जो बहुत सी भावुक अन्वेषक कलीसियाओं में सिखाया जाता है।

इस सबके बारे में यह कहा जाता है कि गैर अमरीकी पास्टरों को अमरीकी कलीसियाई विकास की विधियों से सतर्क रहना चाहिए जिन्हें भूमण्डल के चारों ओर बढ़ावा दिया जाता है। कलीसियाई विकास के बाइबल पर आधारित नमूने पर चलते हुए वे शिष्य बनाने के मसीह के लक्ष्य को पूरा करने में अधिक सफल हो सकेंगे।

परिणाम
The Aftermath

मैंने यह देखा है कि आधुनिक कलीसियाई विकास की शिक्षा के अधिकांश प्रस्तावक विश्व के औसत पास्टरों के स्पर्श में नहीं हैं। अधिकांश पास्टरों के झुण्ड में सौ से भी कम लोग होते हैं। इनमें से अधिकांश पास्टर कलीसियाई विकास की तकनीक पर प्रयास करने के पश्चात् इतने थक गए हैं कि वे कार्य नहीं करते या अपनी कोई गलती न होने पर भी वे निष्फल हो जाते हैं। कोई भी यह स्वीकार नहीं करता है कि पास्टरों को नियंत्रित करने वाले कई घटक हैं जो उनकी कलीसियाओं के विकास को सीमित कर देते हैं। आइये उनमें से कुछ पर विचार करें।

सर्वप्रथम और सबसे पहले, *कलीसियाई विकास को स्थानीय जनसंख्या के द्वारा सीमित किया गया है।* निस्संदेह अधिकांश वही कलीसियाएं विशाल महानगर क्षेत्रों में पाई जाती हैं। उनमें प्राय: इतने मिलियन लोग होते हैं जिन्हें कलीसिया में लिया जाता है। यदि संख्या, सफलता का सही निर्धारण है तो एक कलीसिया का न्याय उसके आकार के आधार पर नहीं बल्कि स्थानीय जनसंख्या की उपस्थिति के *प्रतिशत* के आधार पर होना चाहिए। उस आधार पर, दस लोगों वाली कलीसिया दस हज़ार लोगों वाली कलीसिया से अधिक सफल होगी। पचास लोगों वाले एक गांव में दस लोगों वाली एक कलीसिया पांच मिलियन वाले एक शहर में दस हज़ार लोगों वाली कलीसिया से अधिक श्रेष्ठ है। (तौभी उन दस लोगों वाले पास्टरों को कभी भी कलीसियाई विकास की सभा में बोलने को नहीं कहा जाएगा।)

कलीसिया के विकास को सीमित करनेवाला दूसरा घटक
A Second Limiting Factor to Church Growth

दूसरा, *एक दिये गए क्षेत्र में सभी कलीसियाओं के द्वारा स्वीकार किये गए लोगों के बीच संतृप्ति की मात्रा ने कलीसिया विकास को सीमित कर दिया है।* किसी भी निश्चित समय पर, एक क्षेत्र में बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके हृदय सुसमाचार के लिए खुले होते हैं। एक बार उन सब ग्रहण करने वालों के पास पहुंचने के पश्चात् कलीसिया तब तक विकास नहीं करेगी जब तक कि कलीसिया के कुछ लोगों का स्थानान्तरण दूसरी कलीसिया में न कर दिया जाए (जिससे कितनी ही बड़ी कलीसियाओं का विकास हुआ है– दूसरी कलीसियाओं के खर्च पर)।

बेशक, प्रत्येक वर्तमान समय के मसीही ने एक समय में सुसमाचार को ग्रहण नहीं किया था, लेकिन पवित्र आत्मा के प्रभाव के अन्तर्गत अब वह उसके लिए ग्रहणीय हो गया है। अत:, संभव है कि जो लोग आज ग्रहण नहीं करते हैं वे कल इसे ग्रहण करने वाले हो जाएंगे। उनके ऐसा करने पर कलीसियाएं विकास कर सकती हैं। जब *बहुत* से ग्रहण न करनेवाले लोग अचानक ही ग्रहण करने वाले हो जाते हैं तो हम इसे ''जागृति'' का नाम देते हैं। तौभी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि *एक* व्यक्ति द्वारा ग्रहण किया जाना भी एक जागृति है, केवल एक छोटे मानदण्ड पर। प्रत्येक बड़ी जागृति का आरम्भ एक व्यक्ति द्वारा ग्रहण किये जाने से ही होता है। अत: पास्टर, छोटे दिनों के आरम्भ की उपेक्षा न करें।

यीशु ने अपने शिष्यों को शहरों में यह जानते हुए सुसमाचार का प्रचार करने को भेजा कि उन्हें ग्रहण न किये जाने की संभावना अधिक है, जहां एक भी व्यक्ति पश्चात्ताप नहीं करेगा (देखें लूका 9:5)। तौभी यीशु ने उन्हें वहां प्रचार करने को भेजा। क्या वे शिष्य असफल हुए थे? नहीं, किसी को परिवर्तित न करने पर भी (और कलीसिया विकास न होने पर) वे सफल हुए थे, क्योंकि उन्होंने यीशु की आज्ञा का पालन किया था।

इसी तरह से यीशु आज भी पास्टरों को गांवों, शहरों और उपनगरों में भेजता है जबकि वह जानता है कि वहां बहुत कम लोग ही सुसमाचार को ग्रहण कर पाएंगे। विश्वासयोग्यता के साथ अपनी छोटी मण्डली में सेवा करने वाले पास्टर परमेश्वर की दृष्टि में सफल हैं, चाहे वे कुछ कलीसियाई विकास विशेषज्ञों की दृष्टि में असफल क्यों न हों।

प्रत्येक क्षेत्र के सभी पास्टरों को इस सच्चाई से प्रोत्साहित होना चाहिए कि, परमेश्वर की महान करुणा और अपने लोगों की मध्यस्थता के जवाबों के कारण, वह ग्रहण न करने वाले लोगों को ग्रहण करने में सहायता कर रहा है। वह उद्धार न पाए लोगों को उनके विवेक, अपनी सृष्टि, परिस्थितियों, अपने अस्थायी न्याय, अपनी कलीसियाओं की जीवित गवाही, सुसमाचार के प्रचार और पवित्र आत्मा द्वारा कायल किये जाने के द्वारा प्रभावित करने का प्रयास करता है। इसलिए पास्टर, हिम्मत रखें। प्रार्थना करना, आज्ञा पालन करना और प्रचार करना जारी रखें। किसी भी बड़े स्तर की जागृति से पहले जागृति की *आवश्यकता* आती है। तथा इसके साथ ही जागृति का *स्वप्न* लेनेवाले भी पहले से पाए जाते हैं। स्वप्न देखते रहें!

कलीसिया विकास को सीमित करने वाला तीसरा घटक
A Third Limiting Factor to Church Growth

व्यक्तिगत कलीसियाओं के विकास को सीमित करने वाला तीसरा घटक पास्टर की योग्यता है। अधिकांश पास्टरों में एक बड़ी मण्डली का निरीक्षण कार्य करने की

प्रतिभा नहीं पाई जाती और इसमें उनकी कोई गलती नहीं है। उन में एक बड़ी मण्डली के लिए आवश्यक संस्थागत या प्रबन्धक या प्रचार/शिक्षण कार्य की प्रतिभा नहीं होती। स्पष्ट है कि इस तरह के पास्टर एक बड़ी मण्डली में पास्टर के रूप में कार्य करने हेतु परमेश्वर की ओर से नहीं बुलाए गए हैं, और वे इस तरह का कोई भी प्रयास करते हुए गलती करेंगे, बल्कि एक औसत आकार वाली संस्थागत कलीसिया या गृह कलीसिया में भी।

अमरीका की विशाल कलीसियाओं के एक वरिष्ठ पास्टर द्वारा अगुवाई के विषय पर लिखी गई एक पुस्तक को मैंने अभी हाल ही में पढ़ा था। इस पुस्तक के पृष्ठ आधुनिक पास्टरों के लिए उनके द्वारा अनुभव की गई सलाहों से भरे हैं, मेरा अभिभूत करने वाला विचार यह था: ''वह हमें एक पास्टर बनना नहीं बता रहे हैं वह हमें यह बता रहे हैं कि एक विशाल समूह का प्रमुख वरिष्ठ अधिकारी कैसे बनें।'' और अमरीकी संस्थागत विशाल-कलीसिया के वरिष्ठ पास्टर के सामने इसके अतिरिक्त और कोई चुनाव नहीं है। उसे सहायकों के एक बड़े कर्मचारी वर्ग की आवश्यकता है, और उस कर्मचारी वर्ग का प्रबन्ध करना पूर्ण समर्पण की नौकरी है। मैं पढ़ रहा था कि पुस्तक के लेखक में एक विशाल सांसारिक समूह में प्रमुख वरिष्ठ अधिकारी के रूप में कार्य करने की योग्यता थी। (अपनी पुस्तक में उसने बड़े व्यवसायी प्रबन्ध परामर्शदाताओं को उद्धरित किया है, उनकी सलाह को अपने पास्टरों के पाठकगण पर कार्यान्वित करते हुए।) लेकिन उसके अधिकांश पाठकों में उसके समान अगुवाई और प्रबन्धन की प्रतिभा नहीं है।

इसी पुस्तक में, लेखक ने स्पष्ट रूप से बताया है कि किस तरह से अपनी विशाल मण्डली का निर्माण करते हुए कई अवसरों पर उसने कई ऐसी गलतियां कीं जिसकी कीमत उसके परिवार और उसकी भावी सेवकाई को चुकानी पड़ सकती थी। परमेश्वर के अनुग्रह से वह बच गया था। तथापि उसके अनुभवों ने मुझे स्मरण कराया कि इसी तरह से कई संस्थागत पास्टरों ने सफलता को प्राप्त करने के प्रयास में गलतियां कीं और उन्हें हानि उठानी पड़ी। कुछ ने अपने बच्चों को खोकर और अपने विवाह को बर्बाद कर स्वयं को अपनी कलीसिया को सौंप दिया है। कुछ को गंभीर मानसिक आघात का सामना करना पड़ा। कुछ इतने अनिच्छुक हो गए कि उन्होंने अंतत: सेवकाई को ही छोड़ दिया। बहुत से अन्य बच भी गए, लेकिन इस सब के बारे में यही कहा जा सकता है कि वे अभी भी निराशा में जीवन बिता रहे हैं, इस बात से हैरान होते हुए कि क्या उनके बलिदान की कोई कीमत होगी।

इस विशिष्ट पुस्तक को पढ़ने पर, यह लगातार मेरे मन पर आरम्भिक कलीसिया की बुद्धि को लेकर दवाब डालती रही जिसमें आधुनिक संस्थागत कलीसियाओं के समान कुछ न था, और पास्टर केवल पच्चीस या इतने ही लोगों के झुण्ड से अधिक के लिए उत्तरदायी नहीं होता था। जैसा मैंने पिछले अध्याय में भी कहा, बहुत से

पास्टर जो यह सोचते हैं कि उनकी मण्डली बहुत छोटी है उन्हें यह पुनर्विचार करना चाहिए कि उनकी मण्डली पवित्रशास्त्र के प्रकाश में है। यदि उनके पास पचास लोग हैं, तो उनकी कलीसिया निश्चय ही बड़ी होगी। यदि उसमें योग्य अगुवाई है, तो उसे उन्हें प्रार्थना सहित तीन गृह कलीसियाओं में बांटते हुए अपनी इमारत को बेच देना चाहिए, परमेश्वर के तरीके से शिष्य बनाने और परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लक्ष्य के साथ।

यदि यह अधिक उग्र प्रतीत होता है, तो वे भावी अगुवों को शिष्य बनाने के द्वारा आरम्भ करें, या छोटे समूहों का आरम्भ करें, और यदि उनके पास पहले से ही कुछ छोटे समूह हैं, तो कुछ को स्वतन्त्र गृह कलीसियाओं के रूप में यह देखने को उन्मुक्त करें कि क्या होता है।

अन्य आधुनिक कलीसियाई विकास की तकनीक
Other Modern Church-Growth Techniques

अन्वेषक-भावुक कलीसिया नमूने के अतिरिक्त कलीसिया-विकास के लिए आज अन्य और भी कई तकनीकें हैं। इनमें से अधिकांश तकनीकें गैर-बाइबल संबंधी हैं और ''आत्मिक युद्ध'' की श्रेणी में आती हैं। उनका विज्ञापन इन नामों का प्रयोग करके किया जाता है जैसे, ''दृढ़ गढ़ों को ढाना,'' ''युद्ध प्रार्थना'', और ''आत्मिक मानचित्रण।''

इनमें से कुछ पद्धतियों पर हम आत्मिक युद्ध के बारे में दिये गए अगले अध्याय में विचार करेंगे। संक्षेप में, हमें हैरान होना चाहिए कि जिन पद्धतियों के बारे में प्रेरित नहीं जानते थे उन्हें आज कलीसियाई विकास के लिए इतना ज़रूरी क्यों माना जाता है।

कलीसिया-विकास के अधिकांश साधन उन कुछ पास्टरों के अनुभवों का परिणाम हैं जो कहते हैं, ''मैंने ऐसा या वैसा किया, और मेरी कलीसिया बढ़ गई। अत: यदि, आप भी ऐसा ही करेंगे तो आपकी कलीसिया भी बढ़ेगी।'' तौभी, सच्चाई यह है कि उनकी कलीसियाओं के विकास और उनके द्वारा की जाने वाली चीज़ों के बीच कोई वास्तविक संयोजन नहीं था, तौभी उनका विचार यही था। यह बार-बार प्रमाणित हुआ है कि जब दूसरे पास्टरों ने अपने कलीसियाई विकास के लिए उन्हीं चीज़ों को किया तो उनकी कलीसियाओं में कोई वृद्धि नहीं हुई।

एक कलीसिया-विकास के पास्टर को इस तरह से कहते सुना जाता है, ''जब हमने अपने शहर की दुष्टात्माओं पर चिल्लाना आरम्भ किया तो हमारी कलीसिया में जागृति आ गई। इसलिए यदि आप अपनी कलीसिया में जागृति लाना चाहते हैं तो आपको दुष्टात्माओं पर चिल्लाना आरम्भ करने की ज़रूरत है।''

लेकिन 2000 वर्ष पहले कलीसिया इतिहास में संसार में चारों ओर इतनी अद्‌भुत

जागृतियां क्यों हुई जबकि वहां शहर में दुष्टात्माओं पर चिल्लानेवाला कोई न था? यह प्रगट करता है कि पास्टर का यह *विचार* कि जागृति दुष्टात्माओं पर चिल्लाने का परिणाम है, पूर्णतया गलत है। उसके शहर के लोगों ने सुसमाचार को ग्रहण करना आरम्भ कर दिया है, शायद इसका कारण कलीसिया में मिलकर की जाने वाली *प्रार्थनाएं* हैं, और वह पास्टर सुसमाचार को प्रचार करने के समय वहां था जब उन्होंने उसे ग्रहण किया। अधिकांश समय, कलीसिया विकास का कारण *सही समय और सही स्थान पर होना होता है।* (और पवित्र आत्मा सही समय पर सही स्थान में होने में हमारी सहायता करता है।)

यदि शहर पर की दुष्टात्माओं पर चिल्लाने से एक पास्टर की कलीसिया में जागृति आती है, तो कुछ समय बीतने पर वह जागृति मन्द होते-होते रुक क्यों जाती है? यदि दुष्टात्माओं पर चिल्लाना कुंजी है, तो इसका अर्थ यह निकलता है कि हमारे दुष्टात्माओं पर चिल्लाने के परिणाम में शहर का *प्रत्येक* व्यक्ति मसीह के निकट आएगा। लेकिन ऐसा नहीं होता।

इस बारे में विचार करने पर सत्य प्रकट हो जाता है। कलीसियाई विकास के बाइबल संबंधी स्रोत केवल प्रार्थना, प्रचार, शिक्षण, शिष्य-निर्माण, पवित्र आत्मा की सहायता इत्यादि हैं। और ये स्रोत भी कलीसिया के विकास की गारंटी नहीं देते क्योंकि परमेश्वर ने लोगों को स्वतन्त्र बनाया है। वे पश्चात्ताप करने या न करने का चयन कर सकते हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि यीशु भी उन शहरों में कलीसिया का विकास करने में असफल हो जाता था जहां लोग पश्चात्ताप नहीं करते थे।

इस सब के बारे में यह कहा जा सकता है कि कलीसिया का निर्माण करने के लिए हमें केवल *बाइबल संबंधी* स्रोतों पर अभ्यास करने की ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त कुछ और करना समय की बर्बादी ही होगा। वे लकड़ी, घास और फूस के कार्यों के समान हैं जो एक दिन आग में जल जाएंगे और उनका कोई फल न होगा (1 कुरि. 3:12-15)।

अन्त में, लक्ष्य केवल संख्या वृद्धि का नहीं होना चाहिए, बल्कि शिष्य निर्माण का। यदि हमारे शिष्य बनाने पर कलीसिया बढ़ती है तो परमेश्वर की स्तुति हो!